नन्दीसूत्र के कर्त्ता : परीक्षा और समीक्षा

पवनकुमार जैन*

शोधसार

जैन आगमों के रचनाकारों के सन्दर्भ में अनेक मतभेद रहे हैं। अर्द्धमागधी प्राकृत में लिखे जैन आगम नन्दीसूत्र के रचयिता पर भी विवाद है। पाँच प्रकार के ज्ञान, जैनाचार्यों के जीवन तथा अंग–आगमों के विस्तृत वर्णन वाला यह चूलिकाग्रन्थ कई मायनों में महत्त्वपूर्ण होते हुए भी अपने रचयिता के बारे में कोई प्रकाश नहीं डालता। एक ओर तो कोई इसे देववाचक द्वारा रचित मानते हैं तो कहीं–कहीं इसे देवर्द्धिगणि क्षमाश्रमण की रचना के स्वरूप में स्वीकार किया गया है। नन्दीसूत्र की टीकाओं व अन्य ग्रन्थों में इसके उल्लेखों के आधार पर तथा इसके रचनाकारों की विविध शैलियों के आधार पर प्रस्तुत शोधपत्र इस ग्रन्थ को देवर्द्धिगणि क्षमाश्रमण का होने से अस्वीकार करता है। वे इसके संकलनकार तो हो सकते हैं पर यह निश्चित ही किसी दस–साढ़े नौ पूर्वी आचार्य की रचना है।

भूमिका

'नन्दी' का अर्थ है 'आनन्द'। ज्ञान ही सबसे बड़ा आनन्द है इसलिए चूलिकाग्रन्थ नन्दीसूत्र में मंगल के प्रसंग में चौबीस तीर्थंकरों को वन्दना करते हुए अन्तिम तीर्थंकर भगवान् महावीरस्वामी के ग्यारह गणधरों का उल्लेख किया गया है। तत्पश्चात् सुधर्मा स्वामी से लेकर दूष्यगणि तक स्थविरावली का शिष्यपरम्परा के रूप में निर्देश किया गया है। आगे चलकर आभिनिबोधिकादि पांच ज्ञानों का विस्तार से निरूपण करते हुए गमिक, अगमिक, अंगप्रविष्ट–अंगबाह्य और कालिक–उत्कालिक आदि श्रुत के भेद–प्रभेदों की प्ररूपणा की गयी है। ज्ञान का महत्त्व प्रतिपादन करने वाले नन्दीसूत्र के कर्त्ता के बारे में विद्वानों में मतभेद रहा है, उसी की यहाँ पर समीक्षा की जा रही है।

जिनदासगणि महत्तर ने अपनी चूर्णि में देववाचक को नन्दीसूत्र का कर्त्ता स्वीकार किया है।[1] इसी का अनुसरण हरिभद्रसूरि[2] और मलयगिरि[3] ने भी अपनी नन्दीटीका में किया है। इस प्रकार नन्दीचूर्णिकार, नन्दीटीकाकार एवं आधुनिक पण्डितों ने युगप्रधानावली के आधार से नन्दीसूत्र को दूष्यगणि के शिष्य की रचना माना है। किन्तु इस कथन की सिद्धि के लिए ऐतिहासिक प्रमाणों का अभाव है। अतः उक्त प्रमाणों को प्रबल प्रमाण नहीं कह सकते हैं। इसके सम्बन्ध में तो मात्र इतना कहा जा सकता है कि चूर्णिकार एवं टीकाकार नन्दीसूत्र किसकी रचना है, इसकी गहराई में उतरे ही नहीं। मात्र युगप्रधानावली के आधार से नन्दीसूत्र के कर्ता के रूप में दूष्यगणि के शिष्य को स्वीकार कर लिया।

---

* केन्द्रीय सुधर्म जैन ग्रन्थालय एवं शोध संस्थान, ई–40, शास्त्रीनगर, जोधपुर; ईमेल rpkj80@gmail.com

1 ''एवं कयमंगलोवयारो थेरावलिकमे य दंसिए अरिहेसु य दंसितेसु दुसगणिसीसो देववायगो साहुजणहियट्ठाए इणमाह'' (*नन्दीसूत्रस्य चूर्णिः*, पृ. 10)

2 ''क एवमाह दुष्यगणिशिष्यो देववाचक इति गाथार्थः'' (*नन्दीसूत्रस्य चूर्णिः हरिभद्रीया वृत्तिश्च*, पृ. 20)

3 ''क एवं आह? – उच्यते दुष्यगणिशिष्यो देववाचकः'' (*नन्दीसूत्रम् आचार्य श्रीमलयगिरिकृतटीकायाः संक्षेपरूपअवचूर्या समलंकृतम्*, पृ. 24)

यह सर्वविदित है कि देवर्द्धिगणि क्षमाश्रमण ने आगमों (सम्यक् श्रुत) का लेखन किया है। किन्तु उन्होंने नये ग्रन्थों का लेखन किया हो ऐसे उल्लेख एवं प्रमाण प्राप्त नहीं होते हैं। इसलिए भी देवर्द्धिगणि के द्वारा लिखित होने मात्र से नन्दीसूत्र भी उनकी रचना नहीं है। नन्दीसूत्र का स्वाध्याय अधिक होने से एवं किसी भी उद्देश, समुद्देश, अनुज्ञादि के पूर्व पढ़ा जाने से देवर्द्धिगणि क्षमाश्रमण ने युगप्रधानावली (पट्ट परम्परा) को उसके साथ जोड़ दिया ताकि पट्टपरम्परा की जानकारी भी अध्येताओं को हो जाये एवं उनके प्रति बहुमान की भावना भी व्यक्त हो जाये, क्योंकि हम तक आगम पहुँचाने में वे उपकारी तो हैं ही। अतः नन्दी के पूर्व युगप्रधानावली जोड़ी गयी है। परन्तु इतने मात्र से देवर्द्धिगणि नन्दीसूत्र के रचनाकार सिद्ध नहीं हो जाते हैं। जिसप्रकार समाचारी और गुर्वावली का परिज्ञान कराने के उद्देश्य से प्रतिवर्ष समूह के बीच में वाचन किये जाने वाले पर्युषणा–कल्प (कल्पसूत्र) के साथ में उस समय की प्रचलित समाचारी एवं अपनी गुर्वावली जोड़ दी गयी। परन्तु पर्युषणा–कल्प के साथ गुर्वावली होते हुए भी जैसे उसे देवर्द्धिगणि की रचना नहीं समझा जाता है, उसीप्रकार नन्दीसूत्र के साथ युगप्रधानावली होते हुए भी इसे देवर्द्धिगणि की रचना नहीं समझना चाहिए।

नन्दीसूत्र की प्राचीनता

स्पष्ट है कि नन्दीसूत्र अंग–आगम की चूलिका–स्वरूप रचना है। मात्र इतना ही नहीं, एक सम्प्रदाय तो इसे आगम ही स्वीकार करता है। अतः इसकी प्राचीनता पर प्रश्नचिन्ह का कोई स्थान नहीं है। इस तथ्य के अनुसार देवर्द्धिगणि को इस ग्रन्थ का कर्त्ता स्वीकार करना और भी असम्भव है। साथ ही इसके सम्बन्ध में अन्य हेतु निम्न प्रकार से हैं –

- इस उल्लेख मात्र से कि 'संकलन करके ज्ञान की प्ररूपणा करुंगा[4], देवर्द्धिगणि नन्दीसूत्र के रचानाकर नहीं हो सकते हैं। जिस प्रकार पर्युषणा–कल्प (कल्पसूत्र) आचारदशा (दशाश्रुतस्कन्ध) का अठवां अध्ययन होने से भद्रबाहु की रचना है, उसमें स्थाविरावली और समाचारी देवर्द्धिगणि के द्वारा संकलित होने मात्र से पर्युषणा–कल्प को देवर्द्धिगणि की रचना नहीं कहा जा सकता है। वह भद्रबाहु की ही रचना है। इसी प्रकार नन्दीसूत्र की युगप्रधानावली देवर्द्धिगणि की रचना होने मात्र से नन्दीसूत्र देवर्द्धिगणि की रचना नहीं हो जाती है।

- स्थविरावली की 50 गाथाएं देवर्द्धिगणि (एकपूर्वी) की मानी जाती है। यदि पूरा नन्दीसूत्र भी इन्हीं का होता तो जैसे 50 गाथाओं को अस्वाध्याय काल में भी पढ़ सकते हैं, वैसे ही पूरे नन्दीसूत्र को भी अस्वाध्याय काल में पढ़ना मानते या 50 गाथाएं भी अस्वाध्याय काल में पढ़ना स्वीकार नहीं करते। लेकिन स्थानकवासी समाज की लगभग सभी परम्पराएं 50 गाथाओं का अस्वाध्याय काल में स्वाध्याय करने का निषेध नहीं करती हैं। स्थानकवासी परम्परा ने प्रारम्भ की 50 गाथाओं को छोड़कर शेष नन्दीसूत्र को आगम रूप में स्वीकार किया है।

- नन्दीसूत्र में ही उल्लेख है कि दशपूर्वी एवं उससे अधिक ज्ञानवालों की रचना ही सम्यक् श्रुत है।[5] अतः स्थानकवासी परम्परा दश या उससे अधिक पूर्वधरों की रचना को आगम मानती है। यद्यपि सभी अंगबाह्य आगमों के रचनाकारों के नाम उपलब्ध नहीं होते हैं, फिर भी स्थानकवासी परम्परा ने आगमों

---

4 'णाणस्स परूवणं वोच्छं' (*नन्दीसूत्र,* स्थविरावली 50)

5 'इच्चेअं दुवालसंगं गणिपिडगं – चोदसपुव्विस्स सम्मसुअं, अभिण्णदसपुव्विस्स सम्मसुअं, तेणं परं भिण्णेसु भयणा। स त्तं सम्मसुअं।' (*नन्दीसूत्र* 76)

का गहराई से पर्यालोचन करके अज्ञातनामों की रचनाओं को दशपूर्वी अथवा उनसे अधिक की रचना मानकर आगमरूप में स्वीकार किया है। अतः स्थानकवासी परम्परा के पूर्वजों ने सीमित ऐतिहासिक साधनों के बीच में जो अपनी पैनी अनुभव दृष्टि से नन्दी का बाह्याभ्यन्तर परीक्षण करके प्रारम्भ की गाथाओं को छोड़कर शेष नन्दीसूत्र को सम्यक् श्रुत समझकर आगमरूप मान्यता दी है, वह पूर्ण उचित ही प्रतीत होती है।

- आवश्यकनिर्युक्ति जो भद्रबाहु की रचना मानी जाती है, भले ही वह आज सम्मिश्रित होकर शुद्ध भद्रबाहु की रचना नहीं रही है, इसमें भी मंगलाचरण में पांच ज्ञानरूप नन्दीसूत्र का वर्णन दिया है। आगमकालीनयुग में मंगलाचरण में नन्दीसूत्र का उपयोग होता रहा है, इसलिए देवर्द्धिगणि से पूर्व की रचना मानना ही उपयुक्त लगता है।

- नन्दीसूत्र में निर्दिष्ट अन्य आगमों के अतिदेश उपलब्ध आगमों में नहीं मिलते है। वह इस बात का संकेत करता है कि आगमलेखन काल से पहले ही अर्थात् देवर्द्धिगणि के पहले ही नन्दीसूत्र निर्दिष्ट शेष आगम नष्ट हो चुके थे। उन्हें देवर्द्धिगणि के द्वारा लिखा नहीं गया था अन्यथा कोई न कोई अतिदेश मिलता ही। आगमों के नामों में अनुयोगद्वार के पूर्व नन्दी का नाम आया है। यह पाठ भी अनुयोगद्वार के पूर्व नन्दी की रचना का संकेत करता है।

- नन्दीसूत्र में जो उत्कालिक का क्रम दिया है, उसी क्रम से आगमों की रचना होना स्वीकार करें तो अपने आप नन्दीसूत्र पूर्वधरों की रचना सिद्ध होती है, क्योंकि जैसे सबसे पहले दशवैकालिकसूत्र चौदहपूर्वी शय्यम्भव की रचना, प्रज्ञापनासूत्र दसपूर्वी श्यामाचार्य की रचना, इसके बाद नन्दी का नम्बर और उसके बाद अनुयोगद्वार सूत्र साढे नौ पूर्वी आचार्य आर्यरक्षित की रचना सिद्ध है। अतः इससे ऐसा अनुमान कर सकते हैं कि नन्दीसूत्र श्यामाचार्य और आर्यरक्षित के बीच किसी दस–साढे नौ पूर्वी की रचना होनी चाहिए।

- नयचक्रकार आचार्य श्री मल्लवादी जैन दार्शनिकों में उत्कृष्ट कोटि के तार्किक के रूप में प्रसिद्ध हैं। उनके समय का विशेष उल्लेख विजयसिंह सूरि ने श्री प्रभावक चरित्र के प्राक्कथन में किया है कि आचार्य को वीर संवत् 884 (विक्रम संवत् 414) में बौद्धों के ऊपर विजय प्राप्त हुई थी। ऐसा मुनि जम्बूविजयजी ने अपने द्वारा सम्पादित द्वादशारंनयचक्रम के प्रथम भाग की प्रस्तावना (पृ. 49) में उल्लेख किया है। डॉ. जितेन्द्र बी. शाह ने भी अपनी पुस्तक 'द्वादशार–नयचक्र का दार्शनिक अध्ययन' (पृ. 13–18) में इसका समर्थन किया है। आचार्य हस्तीमल ने अपनी कृति जैनधर्म का मौलिक इतिहास (भाग 3, पृ. 101) में कहा है कि ''प्रबन्धकोश में उल्लिखित कतिपय ऐतिहासिक तथ्यों के परिप्रेक्ष्य में विचार करने पर आचार्य मल्लवादीसूरि का समय वि.सं. 573 तदनुसार वीर निर्वाण सं. 1043 के आसपास का प्रमाणित होता है।''

- द्वादशार नयचक्रम् के टीकाकार श्री सिंहसूरि ने अपनी टीका में अनेक स्थलों पर नन्दी के पाठों के उद्धरण दिये हैं। श्री जम्बूविजयजी लिखा है कि मीमांसक विद्वान् कुमारिल भट्ट के और बौद्ध विद्वान् धर्मकीर्ति के मत का इसमें कोई उल्लेख नहीं है। अतः नयचक्रटीकाकार सिंहसूरि कुमारिल और धर्मकीर्ति से पहले हुए होंगे। अथवा सिंहसूरि दिङ्नाग के समीपकालीन हुए ऐसा माना जा सकता है। मल्लवादी और सिंहसूरि और बीच के समय में कुछ अन्तर अवश्य था। (द्वादशारं नयचक्रम् प्रथमो विभागः, 'प्रस्तावना' पृ. 74–75) अतः स्पष्ट होता है कि सिंहसूरि देववाचक से पहले हुए हैं।

द्वादशारं नयचक्रम् की टीका में प्रयुक्त नन्दीसूत्र के पाठ के कुछ उदाहरण –

- एयं दुवालसंगं गणिपिडगं दव्वतो एगं पुरिसं पडुच्च सादियं.....सादियं सपज्जवसितमेव। (द्वादशारं नयचक्रम् द्वितीयो विभागः, पृ. 737; नन्दीसूत्र 43)

- जत्थाभिनिबोहिअनाणं तत्थ सुअनाणं। जत्थ सुअनाणं तत्थाभिनिबोहिअनाणं। (द्वादशारं नयचक्रम् प्रथमो विभागः, पृ. 3–4; नन्दीसूत्र 45 परोक्षज्ञान)

- अक्खरस्स अणंतभागो णिच्चुग्घाडितओ सव्वजीवाणं। (द्वादशारं नयचक्रम् प्रथमो विभागः, पृ. 190; नन्दीसूत्र 43)

- सव्वजीवाणं पि य णं अक्खरस्स अणंतभागो णिच्चुग्घाडितओ। (द्वादशारं नयचक्रम् द्वितीयो विभागः, पृ. 559; नन्दीसूत्र 43)

- तेण जीवो अजीवतं पविज्जा। सुट्ठुवि मेहसमुदए होइ पभा चंदसूराणं। (द्वादशारं नयचक्रम् द्वितीयो विभागः, पृ. 559; नन्दीसूत्र 43)नन्दीसूत्र में पारिणामिक बुद्धि के दृष्टान्तों में 'वइरे'[6] से आचार्य व्रजस्वामी तक का दृष्टान्त है। उसके बाद का दृष्टान्त नहीं है। इससे ऐसा अनुमान कर सकते हैं कि भद्रगुप्त आचार्य वज्र के गुरु थे। गुरु के सन्मुख ही आचार्य वज्र वाचना देने लगे थे तथा युगप्रधान भी बन गये थे। अतः नन्दी भद्रगुप्त की भी रचना हो सकती है अथवा आर्यवज्र से पर्याय ज्येष्ठ किसी समकालीन 10 पूर्वी की रचना हो सकती है। क्योंकि आर्यवज्र की बुद्धि की घटना तो घट गयी थी, उसके बाद ही नन्दी की रचना हुई होगी।

- आचार्य हस्तीमलजी ने नन्दीसूत्र की प्रस्तावना (पृ. 4) में उल्लेख किया है कि नन्दीसूत्र में आये हुए 'तेरासिय'[7] पद का अर्थ नन्दीचूर्णिकार[8] और वृत्तिकारों[9] ने 'आजीविक सम्प्रदाय' ही किया है। यदि देववाचक ही नन्दीसूत्र के मूलकर्त्ता रूप में मान्य हो जाते तब चूर्णि और वृत्ति में भी 'तेरासिय' पद का अर्थ भी आचार्य त्रैराशिक सम्प्रदाय करते, क्योंकि वीर निर्वाण 544 में रोहगुप्त आचार्य से त्रैराशिक सम्प्रदाय का आविर्भाव हो चुका था। तथापि 'तेरासिय' पद से आजीवक का ही ग्रहण किया है। आचार्य हस्तीमलजी का यह उल्लेख सिद्ध करता है कि नन्दीसूत्र मौलिक रूप से गणधर कृत है, क्योंकि देववाचक का कालमान दूष्यगणि के पश्चात्वर्ती माना गया है, वी.नि. 544 के पूर्व का नहीं।

- आगमकालीन युग में मंगलाचारण में नन्दी का उपयोग होता रहा है, इस अपेक्षा से भी नन्दी को देवर्द्धिगणि से पूर्व की रचना मानना अधिक उपयुक्त प्रतीत होता है। जैसे आवश्यक निर्युक्ति मूलतः भद्रबाहु की रचना है, जिसमें मंगलाचरण के रूप में पांच ज्ञान रूप नन्दी का वर्णन है।

---

6 "नासिक्क सुंदरीनंदे 'वइरे' परिणाम बुद्धीए'' (*नन्दीसूत्र* 53)

7 "छ चउक्क नइआइं, सत्त तेरासियाइं'', (*च्युताऽच्युत श्रेणिका परिकर्म, नन्दीसूत्र* 104)

8 "ते चेव आजीविया तेरासिया भणिया'' (*नन्दीसूत्रस्य चूर्णि*, पृ. 55–56)

9 "त्रैराशिकाश्चाजीविका एवोच्यन्ते'' (वही, पृ. 107)

- नन्दीसूत्र का निर्देश अन्य आगमों में मिलता है; यथा 'जहा नन्दीए' ऐसा उल्लेख भगवतीसूत्र[10], समवायांगसूत्र[11] तथा राजप्रश्नीयसूत्र[12] आदि में प्राप्त होता है। इससे नन्दीसूत्र की प्राचीनता स्वयं सिद्ध होती है।

- दलसुख मालवणिया ने भी नन्दी को देवर्द्धिगणि की रचना नहीं माना है। (जैनधर्म का आदि काल, पृ. 7।)

- आचार्य देवेन्द्रमुनिजी ने नन्दीसूत्र का रचना काल वि. स. 523 से पूर्व का सिद्ध किया है। (जैन आगम साहित्यः मनन और मीमांसा', पृ. 328–329)

विविध विवेचनाओं के आधार पर तथा नन्दीसूत्र की विषयवस्तु परवर्ती ग्रन्थों में उल्लिखित होने से यह कहना तर्कसंगत है कि नन्दीसूत्र प्राचीन रचना है। इसीलिए देवर्द्धिगणि इसके रचनाकार नहीं हो सकते।

नन्दीसूत्र संकलित है

आश्चर्य नहीं होगा यदि यह कहा जाय कि नन्दीसूत्र संकलित ग्रन्थ है। चूलिकाग्रन्थ होने से सूत्र की रक्षा के हेतु इसे बाद में संकलित किया स्वीकारा जा सकता है। इस सम्बन्ध में विशेष तर्क निम्नलिखित हैं–

- उपाध्याय समयसुन्दरजी ने समाचारीशतक में उल्लेख किया है कि अर्थात् ग्यारह अंग गणधर भाषित हैं। अन्य सभी आगमों को छद्मस्थ पूर्वाचार्य अंग आगमों से उद्धृत करते हैं। जैसे कि श्री श्यामाचार्य ने प्रज्ञापना को उद्धृत किया था। इस आधार से कह सकते हैं कि नन्दीसूत्र को भी अंग आगमों से उद्धृत किया गया है।[13]

- नन्दीसूत्र स्थानांगसूत्र, अनुयोगद्वार, दशाश्रुतस्कन्ध, भगवती, प्रज्ञापना आदि आगमों से संकलित किया गया है। इसको सप्रमाण आचार्य श्री आत्मारामजी महाराज ने सातारा से प्रकाशित नन्दीसूत्र की भूमिका में सिद्ध किया है। इसी प्रकार आचार्य श्री हस्तीमलजी ने देववाचक को नन्दीसूत्र के संग्राहक के रूप में स्वीकार किया है ('प्रस्तावना' श्रीमन्नन्दीसूत्र, पृ. 3)।यद्यपि हरिभद्रसूरि ने देववाचक को नन्दी का कर्त्ता माना है, नन्दीवृत्ति में मनःपर्ययज्ञान के वर्णन के समय उन्होंने भी उल्लेख किया है कि पूर्व सूत्रों के आलापकों को आचार्य ने अर्थवश रचा है।[14]

---

10 "सुयआण्णाणे जं इमं अण्णाणिएहिं जहा **नंदीए** जाव चत्तारि वेदा संगोवंगा'' (*भगवतीसूत्र,* 8.2.24),
"एवं अंगपरुवणा भाणियव्वा जहा **नंदीए**'' (वही, 25.3.116)

11 "अट्ठासीइ सुत्ताणि भाणियव्वाणि जहा **नंदीए**'' (*समवायांग सूत्र* 88.409)

12 "उग्गहे दुविहे पण्णत्ते, जहा **नंदीए** जाव सेत्तं धारणा.....ओहिणाणं भवच्चइयं, खओवसमियं जहा **णंदीए**'' (*राजप्रश्नीयसूत्र* 241)

13 ''एकादश अंगानि गणधरभाषितानि अन्यागमाः सर्वेऽपि छद्मस्थैः पूर्वाचार्यैः अंगेभ्य उद्धृताः सन्ति, यथा प्रज्ञापना श्रीश्यामाचार्येण कृता।'' (समाचारीशतक, पृ. 76)

14 ''पूर्वसूत्रालापका एवार्थवशाद्विरचिताः'' (*नन्दीसूत्रस्य चूर्णिः हरिभद्रीया वृत्तिश्च,* पृ. 42)

- देवर्द्धिगणि ने आर्यरक्षित के लिए कहा है कि इन्होंने अनुयोग की रक्षा की है, रचना नहीं।[15] वैसे ही देवर्द्धिगणि ने नन्दी का संकलन किया है, रचना नहीं।

- इतिहासवेत्ता कल्याणविजय द्वारा लिखित 'प्रबन्ध पारिजात' के 'निशीथ सूत्र का निर्माण और निर्माता' (पृ.15) लेख के अनुसार ''नन्दी, अनुयोगद्वार आदि सूत्र अन्तिम वाचना के पहले निर्मित हो चुके थे। नन्दी के प्रारम्भ में तथा आवश्यक के प्रारम्भिक गाथाओं में जो मंगलाचरण दिये हैं, वे तत्कालीन हो सकते हैं, शेष नहीं।'' देवर्द्धिगणि क्षमाश्रमण के समन्वय के अतिरिक्त परिवर्तन करने के कोई प्रमाण नहीं मिलते।' पूरे लेख में और भी सविस्तार वर्णन हो सकता है। इस प्रकार उपर्युक्त लेख में कल्याणविजय स्कन्दिलाचार्य से पूर्व नन्दी का निर्माण होना स्वीकार करते हैं एवं देवर्द्धिगणि को तो मात्र संकलन माना है।

- नन्दीसूत्र में आचारांग, सूत्रकृतांग, स्थानांग, भगवतीसूत्र, जीवाभिगमसूत्र, प्रज्ञापना सूत्र, अनुयोगद्वारासूत्र आदि से तद्विषयक आगमपाठ उद्धृत किये गये हैं, इससे भी इसके संकलन का प्रमाण पुष्ट होता है।

इस प्रकार इस ग्रन्थ के संकलन ग्रन्थ होने की सम्भावना सिद्ध होती है।

उपसंहार

उक्त चर्चा के सारांश में यही मानना अधिक तर्क संगत प्रतीत होता है कि नन्दीसूत्र या तो किसी दस–साढे नौ पूर्वी आचार्य की रचना है अथवा देवर्द्धिगणि द्वारा इसका संकलन किया गया है, लेकिन उन्होंने इसकी रचना नहीं की है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

आचार्य देवेन्द्रमुनि शास्त्री, 'जैन आगम साहित्यः मनन और मीमांसा', श्री तारकगुरु जैन ग्रन्थालय, उदयपुर, 1977।
आचार्य हस्तीमल, जैनधर्म का मौलिक इतिहास, भाग 3, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर, 2020।
आचार्य हस्तीमल, श्रीमन्नन्दीसूत्र, रायबहादुर श्री मोतीलालजी मुथा, सातारा, 1942।
कल्याणविजयजी, प्रबन्ध पारिजात, श्री कल्याणविजय शास्त्र संग्रह समिति, जालोर।
जम्बूविजयजी, द्वादशारं नयचक्रम् प्रथमो विभागः, श्री जैन आत्मानंद सभा, भावनगर, 1966।
जम्बूविजयजी, द्वादशारंनयचक्रम् द्वितीयो विभागः, श्री जैन आत्मानंद सभा, भावनगर, 1976।
जितेन्द्र बी. शाह, द्वादशार–नयचक्र का दार्शनिक अध्ययन, श्रुतरत्नाकर, अहमदाबाद व श्री जिनकान्तिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट, 2008।
दलसुख मलवणिया, जैनधर्म का आदि काल, लालभाई दलपतभाई भारतीय संस्कृति विद्यामन्दिर, अहमदाबाद, 2012।
नन्दीसूत्र, सम्पादक– मधुकरमुनि, प्रकाशक– श्री आगम प्रकाशन समिति ब्यावर, 2000।
नन्दीसूत्रम् आचार्य श्रीमलयगिरिकृतटीकायाः संक्षेपरूपअवचूर्या समलंकृतम्, सम्पादक– भास्करविजय, प्रकाशक– देवचन्द लालभाई जैन पुस्तकोद्धारकोश, 1969।
नन्दीसूत्रस्य चूर्णिः, सम्पादक– मुनि दीपरत्न सागर, प्रकाशक– श्री ऋषभदेवजी केशरजी श्वेताम्बर संस्था, रतलाम, 1928।
नन्दीसूत्रस्य चूर्णिः हरिभद्रीया वृत्तिश्च, सम्पादक– सागरनन्दसूरि, प्रकाशक– श्री ऋषभदेवजी केशरजी श्वेताम्बर संस्था, रतलाम, 1928।
भगवतीसूत्र/व्याख्याप्रज्ञप्ति, सम्पादक– मधुकर मुनि, प्रकाशक– श्री आगम प्रकाशन समिति ब्यावर, 2003।

---

15 वंदामि अज्जरविक्खयखवणे, रक्खिय चरित्तसव्वस्से। रयण–करंडगभूओ–अणुओगो रक्खिओ जेहि।।' (*नन्दीसूत्र* 32)

राजप्रश्नीयसूत्र, सम्पादक– मधुकर मुनि, प्रकाशक– श्री आगम प्रकाशन समिति ब्यावर, 2003।
श्यामाचार्य, समाचारीशतक, श्रीजिनदत्त ज्ञानभण्डार, मुम्बई, 1939।
समवायांग सूत्र, सम्पादक– मधुकर मुनि, प्रकाशक– श्री आगम प्रकाशन समिति ब्यावर, 2003।